सत्यमेव जयते

ગુજરાતી ભાષા પ્રવેશિકા
गुजराती भाषा प्रवेशिका
GUJARATI PRIMER

CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें	क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें	स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें	लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें	उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें	अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी	पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें	क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें	कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें	क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

" जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।"

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

ગુજરાતી ભાષા પ્રવેશિકા

गुजराती भाषा प्रवेशिका

GUJARATI PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

ગુજરાતી ભાષા પ્રવેશિકા
गुजराती भाषा प्रवेशिका
GUJARATI PRIMER

A basal reader of Gujarati alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Ramanujam Meganathan

ISBN: 978-81-970852-5-3

First Edition: December, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Saravanan A S
Cover Photo: Gujarati Resource Persons

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
Minister of Education
Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.sm@gov.in

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Government of India
Ministry of Education
Department of School Education & Literacy

संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चो में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

(संजय कुमार)

124 'सी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
124 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110001
Telephone: +91-11-23382587, +91-11-23381104 Fax : +91-11-23387589
E-mail: secy.sel@nic.in

प्राक्कथन

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, संस्कृति का एक उपादान भी है। भाषा समुदाय की पहचान होती है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित भी करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है- एक ओर भारत की भाषिक विविधता एवं समृद्धि को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारत के संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं से संबंधित हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि बच्चों में भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों- यह किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह सशक्त नींव न केवल भविष्य में विद्यालयी एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर) का लक्ष्य छोटे बच्चों या भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से परिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों जैसे-बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी।

शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी द्वारा उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

दिसंबर 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका/Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

ભારત યુગોથી બહુભાષી દેશ રહ્યો છે, જેમાં દેશના વિવિધ પ્રદેશોમાં ઘણી ભાષાઓ બોલાય છે. આપણા મૌખિક ભંડારમાં બહુવિધ ભાષાઓનો ઉપયોગ કરવો તે દેશની સામાન્ય લાક્ષણિકતા છે; તે આપણને એક સાથે બાંધે છે અને એકતા રાખે છે. રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ (NEP) 2020 એ વિચાર પર ભાર મૂકે છે, કે ભારતની બહુભાષી પ્રકૃતિ એ એક

વિશાળ સંપત્તિ છે જેનો રાષ્ટ્રના સામાજિક-સાંસ્કૃતિક, આર્થિક, અને શૈક્ષણિક વિકાસ માટે અસરકારક રીતે ઉપયોગ કરવાની જરૂર છે. તે દરેક સ્તરે શિક્ષણમાં બહુભાષીયતાને પ્રોત્સાહન આપવાની ભલામણ કરે છે જેથી શીખનારાઓને તેમની પોતાની ભાષા(ઓ)માં અભ્યાસ કરવાની તક મળે. બધી ભારતીય ભાષાઓમાં શિક્ષણ-અધ્યયન સામગ્રીનું નિર્માણ આમ આ બહુભાષી સંપત્તિને વેગ આપશે અને તેને 'વિકસીત ભારત'માં વધુ સારું યોગદાન આપવા માટે પરવાનગી આપશે. તેમ છતાં, NEP 2020 સાથે સંરેખણમાં પ્રારંભિક-કક્ષાઓ માટેની પ્રવેશિકા વિકસાવવા માટે એક વ્યાપક અને સમાવિષ્ટ અભિગમની જરૂર છે જે ભારતના દરેક ક્ષેત્રની વિશિષ્ટ ભાષાકીય અને સાંસ્કૃતિક લાક્ષણિકતાઓને સંબોધિત કરે છે. આ પ્રવેશિકાઓનો ઉદ્દેશ્ય માત્ર વાંચન અને લેખનમાં ભાષા પ્રાવીણ્ય પ્રદાન કરવાનો નથી પણ પ્રારંભિક તબક્કાના શીખનારાઓમાં સર્જનાત્મકતા અને વિવેચનાત્મક વિચારસરણીને પ્રોત્સાહન આપવાનો છે. તે ભાષાના મૂળાક્ષરો અને પ્રતીકોના ઉચ્ચારણ, ઓળખવા, સમજવા માટેની ચાવી છે. તે બાળકોને આ અક્ષરોના એક અથવા વધુ સેટના અર્થથી પણ પરિચિત કરે છે જેમ કે શબ્દના પ્રારંભિક, મધ્યસ્થ અને અંતિમ સ્થાનોમાંના અક્ષરો. તદુપરાંત, તે ઉદાહરણો પૂરા પાડે છે જે પાછળથી રજૂ કરાયેલા અક્ષરોના લેખન અભ્યાસને સરળ બનાવે છે; અને જોડકણાં વિદ્યાર્થીઓને તેમના ભાષા વિકાસ અને જ્ઞાનાત્મક કૌશલ્યોમાં મદદ કરશે.

दिसंबर 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Gujarati Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra Prasad Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Coordinators

Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

Editorial Coordinator

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Resource Persons

Preeti Shukla, Assistant Professor, Publications Division, Central Sanskrit University, New Delhi
Narmada Patel, Freelancer, Mumbai
Shreya Parmar, Junior Resource Person, National Translation Mission (NTM), CIIL, Mysuru

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), NTM, CIIL, Mysuru
Jewsnrang Basumatary, Resource Person (Teaching) in Bodo, North Eastern Regional Language Centre, (CIIL), Guwahati
Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

ભાષા પ્રવેશિકાને કેવી રીતે ભણાવવી (ગુજરાતી)

ગુજરાતી, તે ઈન્ડો-આર્યન ભાષા પરિવારનો ભાગ છે. ભારતમાં, તે સંઘની 22 અનુસૂચિત ભાષાઓમાંની એક છે. તે ગુજરાત રાજ્યની અધિકૃત ભાષા છે, તેમજ દાદરા અને નગર હવેલી અને દમણ અને દીવના કેન્દ્રશાસિત પ્રદેશમાં સત્તાવાર ભાષા છે. ભારતની 2011ની વસ્તીગણતરી મુજબ, મૂળ બોલનારાઓની સંખ્યા ધ્યાનમાં રખતાં, ગુજરાતી ભારતમાં છઠ્ઠી સૌથી વધુ બોલાતી ભાષા છે, જે 55.5 મિલિયન બોલનારાઓ દ્વારા બોલાય છે જે કુલ ભારતીય વસ્તીના લગભગ 4.5% જેટલી છે. ગુજરાતને બાદ કરતાં, ગુજરાતી દક્ષિણ એશિયાના ઘણાં બધા વિસ્તારોમાં બોલાય છે. રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ, મહારાષ્ટ્ર, તમિલનાડુ અને દિલ્હીના કેન્દ્રશાસિત પ્રદેશોમાં ગુજરાતીને લઘુમતી ભાષા તરીકે ઓળખવામાં આવે છે અને શીખવવામાં પણ આવે છે.

રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ, 2020 અને રાષ્ટ્રીય પાઠ્યક્રમ રૂપરેખા 2022ના અંતર્ગત ત્રણ થી આઠના બાળકોની માતૃભાષા, ઘરની ભાષા, સ્થાનિક ભાષા, તથા ક્ષેત્રની ભાષામાં શિક્ષા દાનની વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. ભારતના ગ્રામીણ વિસ્તારોમાં ઘણાં બાળકો ધોરણની ભણતરપધ્ધતિ પ્રણાલીને સમજી શકતા નથી. આ શાળાની ભણતર પધ્ધતિ વ્યવસ્થાને પ્રોત્સાહન આપે છે. તેથી કેન્દ્ર સરકારે 3 થી 8 વર્ષના બાળકોને બાળવાટિકા તેમજ પ્રથમ-દ્વિતીય ધોરણના બાળકોને આજ પ્રાથમિક સ્તર પર મૌલિક સાક્ષરતા પ્રદાન કરવાની વ્યવસ્થા કરી છે. આમાં સ્થાનિક ગીતો અને વાર્તાઓના માધ્યમથી બાળકોની મૌનતા અને માનસિક ગ્રંથિને દૂર કરી તેમની મૌખિક ભાષાના વિકાસ પર ધ્યાન આપવામાં આવ્યું છે. આ કામ પુસ્તકના વાર્તા ચિત્ર તેમજ વાર્તાલાપના માધ્યમથી કરવામાં આવી રહ્યું છે. આની સાથે બાળકોનો ધ્વનિ પરિચય, વર્ણ પરિચય, વાંચન તેમજ લેખનના અભ્યાસ માટે શિક્ષણ પુસ્તકનો પ્રયોગ કરવામાં આવે છે.

બાળકોને બાળવાટિકા સ્તરથી ત્રીજા ધોરણ સુધી માતૃભાષામાં ભણાવવાથી તેમના બૌદ્ધિક વિકાસની સાથે સર્જનશીલતા તેમજ કલ્પના શક્તિનો વિકાસ થઈ શકે છે. બાળકો પોતાની માતૃભાષામાં વાંચતા–લખતા શીખવા સાથે ધીરે-ધીરે હિંદી ભાષામાં વાંચતા-લખવાનું પણ શીખે છે, એનું સાર્થક પદ્ધતિ રાષ્ટ્રીય પાઠ્યક્રમ રૂપરેખા, 2022માં વિસ્તૃત રૂપથી લખવામાં આવ્યું છે. બાળકો પહેલા વાંચવા-લખવાનું શીખે છે. આથી ગુજરાતી ભાષાની વર્ણમાળાની પુસ્તકમાં બાળકોની માતૃભાષા તેમજ શાળાની હિંદી ભાષાના સમસ્ત ધ્વનિ, વર્ણ તેમજ માત્રાને સ્થાન આપવામાં આવ્યું છે. બાળકોની સંસ્કૃતિ તેમજ પરિવેશથી શબ્દ સંગ્રહ કરીને પુસ્તકમાં સ્થાન આપવામાં આવ્યું છે.

બહુભાષી શિક્ષાનું મૂળ લક્ષ્ય બાળકોને ઘરની ભાષાથી વાંચતા-લખતા શરૂ કરીને રાજ્યની ભાષામાં લખવા-વાંચવાની ક્ષમતા વધારવાનું છે. ગુજરાતીમાં પ્રસ્તુત આ પ્રવેશિકા ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષકો તથા વિદ્યાર્થીઓની માટે બનાવવામાં આવી છે. મૌલિક સાક્ષરતાના ચાર પ્રમુખ પાયાઓ હોય છે. પહેલા તબક્કામાં વાર્તા કથા અને ચિત્રના માધ્યમથી બાળકોના બૌદ્ધિક વિકાસ કરવામાં આવે છે. ત્યારબાદ ભાષા શિક્ષણ માટે વિદ્યાર્થીઓને વસ્તુની સાથે-સાથે શબ્દના સંપર્કથી પરિચિત કરવામાં આવે છે. ગોઠવાયેલા અક્ષરોને શબ્દોમાં પરિચય આપવામાં આવે છે. આ પર્યાયમાં બાળકો જુદા-જુદા અક્ષરોને ઓળખતા શીખે છે. તેના માધ્યમથી બાળકો ધ્વનિ અને વર્ણના વચ્ચેનો સંપર્ક સમજે છે. આ ભાષા પ્રવેશિકા કેવી રીતે વાંચવી એના મૂળ બિંદુઓને નીચે લખવામાં આવ્યા છે:

ધ્વનિ પરિચય: બાળકો ચિત્ર જોઈને વસ્તુનું નામ કહેશે. શિક્ષક પૂછશે ચિત્રનું નામ કઈ ધ્વનિથી શરૂ થાય છે; જેમ કે 'અગ્નિ' ચિત્ર જોઈને આ 'અ' ધ્વનીથી શરૂ થાય છે બાળકો તે ઓળખશે.

વર્ણનો પરિચય: શિક્ષક પહેલા બાળકોને બતાવશે 'અ'વર્ણ કેવો દેખાય છે, આપેલ કેટલાક શબ્દોમાંથી 'અ' અક્ષર અથવા વર્ણન ઓળખવા માટે કહેશે ત્રણ-ચાર શબ્દોમાંથી બાળકો 'અ' અક્ષરની ધ્વનિનો ઉચ્ચારણ કરશે અને 'અ' અક્ષર ને લખવાનો અભ્યાસ કરશે.

વાંચન: બાળકો ચિત્ર જોઈને પોતાની ભાષામાં શબ્દ બોલશે. એ શબ્દની ડાબીથી જમણી તરફ આંગળી ચલાવીને બાળકો 'અગ્નિ' વાંચશે. અન્ય શબ્દ વાંચીને શબ્દોમાં બાળકો 'અ'ને ઓળખશે અને બોલશે શબ્દના શરૂઆતમાં અને અંતમાં 'અ' ક્યાં છે શિક્ષક બાળકોને બતાવશે.

કાળા પાટિયા ઉપર 'અ' વાંચતી વખતે શિક્ષક 'અગ્નિ' શબ્દની સાથે અન્ય ત્રણ-ચાર શબ્દ પણ લખશે. બાળકોને એક એક કરીને બોલાવશે. શબ્દ વાંચવા અને વર્ણને ઓળખવા માટે આ બધા શબ્દ બાળજગતમાંથી લેવામાં આવ્યા છે. બાળકો પુસ્તકમાં ચિત્ર જોઈને આ શબ્દોને ઓળખી શકશે, પોતાની ભાષામાં બોલી શકશે, આ વાંચવામાં બાળકને સહજતાનો અનુભવ થશે. શિક્ષક એક શબ્દ લખાવીને એના પ્રત્યેક વર્ણને બાળકોને વર્ણ પરિચય, શબ્દ પરિચય, અને ધ્વનિ પરિચય પણ કરાવી શકે છે. એક બાળક શબ્દને વાંચતા સમયે અન્ય બાળકો એની સાથે મળીને શબ્દને પુનરાવર્તિત કરશે, આને કહેવાય છે સામૂહિક વાંચન.

લેખન: શિક્ષક પહેલા બાળકોને 'અગ્નિ' શબ્દને લખતા શીખવાડશે. ડાબીથી જમણી તરફ લખવા માટે પેનને કેવી રીતે ચલાવવામાં આવે છે, શિક્ષક આ કરીને બતાવશે. આને કહેવાય છે સહાયક લેખન. ત્યાર પછી બાળકો પુસ્તકમાં આપેલ ખાલી જગ્યાઓમાં, વર્ણને જોઈને સ્વયં લખશે. બાળકોને લખતા-વાંચતા સમયે શિક્ષક સહયોગ કરશે.

બાળકોના મૌખિક ભાષાના વિકાસ માટે પ્રત્યેક અક્ષર પરિચય પછી બે-ત્રણ વાક્યના ગીતો લખેલ છે જે શિક્ષક ગાઈને અને વાંચીને બાળકો સાથે ચર્ચા કરશે અને શાળાના પુસ્તકાલયમાં ઉપલબ્ધ બાળ વાર્તાઓની પુસ્તકમાંથી વાર્તાઓ વાંચશે અને બાળકો સાથે ચર્ચા કરશે. શિક્ષક પ્રથમ અને દ્વિતીય ધોરણના બાળકોને એમની માતૃભાષામાં વાર્તા અને ગીત પણ સંભળાવશે. પ્રવેશિકામાં જેટલા શબ્દ આપવામાં આવ્યા છે, તે સાક્ષરતાના નમુના માત્ર છે. બાળકો સોની સંખ્યામાં શબ્દ જાણે છે. એક વર્ણ વાળો શબ્દ પૂછીને બાળકો અનેક શબ્દ સંભળાવી શકાય છે. શિક્ષક પૂછી શકે છે કે 'અ'થી શરૂ થતા કેટલાક શબ્દો સંભળાવો.

બાળકોની સુવિધા માટે પહેલા ગુજરાતીમાં ઉપલબ્ધ વર્ણમાળાથી ગીત, શબ્દ, અને અક્ષર આપવામાં આવ્યા છે. આ શીખતા સમયે બાળકો પોતાની માતૃભાષાથી હિંદીની ધ્વની અને લિપિ શીખે શકે છે.

નોંધ

રાજ્યની શાળામાં 'શિક્ષક સહાયક પુસ્તિકા' વાંચીને તમે મૌલિક સાક્ષરતાના વિશે વધુ જાણકારી લઈ શકો છો.

નીચે આપેલી રેખાઓને જુઓ અને ખાલી જગ્યાઓમાં એ જ પ્રમાણની રેખાઓ બનાવો.

ઊભી રેખા :

આડી રેખા :

ત્રાસી રેખા ૧ :

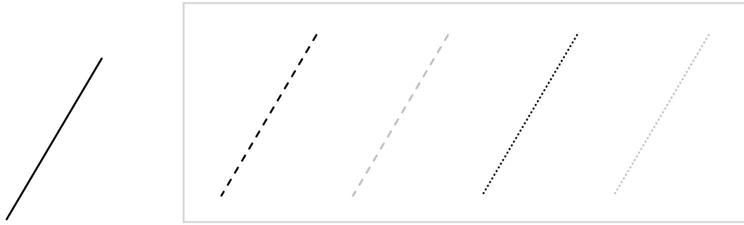

ત્રાસી રેખા ૨ :

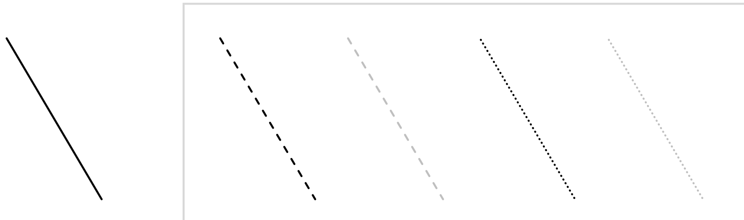

અર્ધ ગોળાકાર રેખા ૧ :

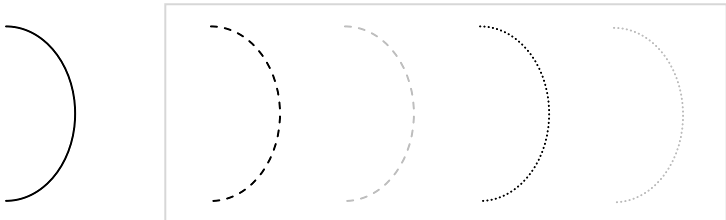

અર્ધ ગોળાકાર રેખા ૨ :

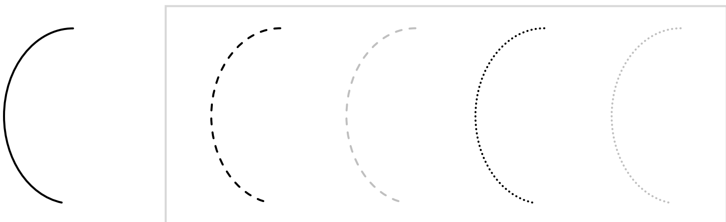

નોંધ: શિક્ષક વિદ્યાર્થીઓને શિખવાડશે કે પેન/પેન્સિલને કેવી રીતે પકડવી અને આપેલ જગ્યાઓમાં રેખાઓ કેવી રીતે ખેંચવી.

ગુજરાતી વર્ણમાળા

સ્વર						
અ	આ	ઇ	ઈ	ઉ	ઊ	ઋ
એ	ઐ	ઓ	ઔ	અં	અઃ	

વ્યંજન				
ક	ખ	ગ	ઘ	ઙ
ચ	છ	જ	ઝ	ઞ
ટ	ઠ	ડ	ઢ	ણ
ત	થ	દ	ધ	ન
પ	ફ	બ	ભ	મ
ય	ર	લ	વ	શ
ષ	સ	હ	ળ	
	ક્ષ	ત્ર	જ્ઞ	

અ

અખરોટ

अखरोट

અ થી અખરોટ
અખરોટ રોજ ખાઓ
અને સ્વસ્થ રહો

	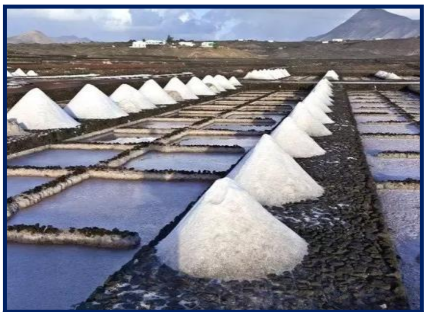	
અરીસો	અગર	અગરબત્તિ
दर्पण	लवण क्यारी	अगरबत्ती

અ અ અ

આ

આભ

आकाश

આ થી આભ
પૃથ્વી સમું નહિ બેસણું
આભ સમું નહિ છત્ર

આદુ

अदरक

આગિયો

जुगनू

આસન

आसन

આ આ આ

ઈ

ઈનામ

पुरस्कार

ઈ થી ઈનામ
રમત રમો
ઈનામ જીતો

ઈસ્ત્રી

इस्त्री

ઈમારત

भवन

કઢાઈ

कड़ाही

ઈ ઈ ઈ

ઈ

ઈખ

ईख

ઈ થી ઈખ
ઈખનો રસ
મીઠો મીઠો રસ

મકાઈ

मकई

ઊધઈ

दीमक

ટિપાઈ

तिपाई

ઈ ઈ ઈ

ઉ	ઉદ્યાન
	उद्यान

ઉ થી ઉદ્યાન
ઉદ્યાનમાં ફરો
અને રમતો રમો

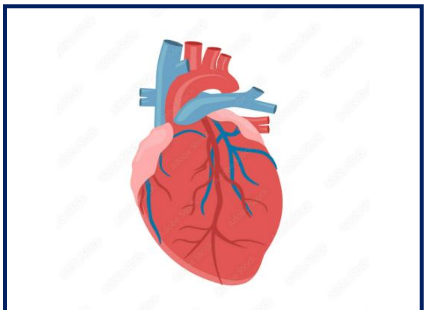		
ઉર	ઉપહાર	ઉલ્કા
हृदय	उपहार	उल्का

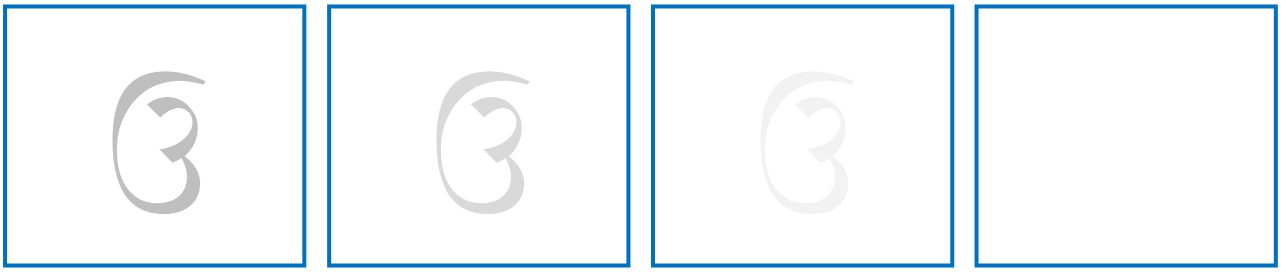

ઊ

ઊન

ऊन

ઊ થી ઊન
ઊનના કપડા પહેરો
જોવો ન ક્યારેય ઠંડીનો ચહેરો

ઊંટ

ऊंट

ઊરૂ

जांघ

ઊલિયું

जीभ खुरचनी

ઊ ઊ ઊ

ઋ

ઋષિ

ऋषि

ઋ થી ઋષિ
ઋષિ તપ કરે
સહુનો કલ્યાણ કરે

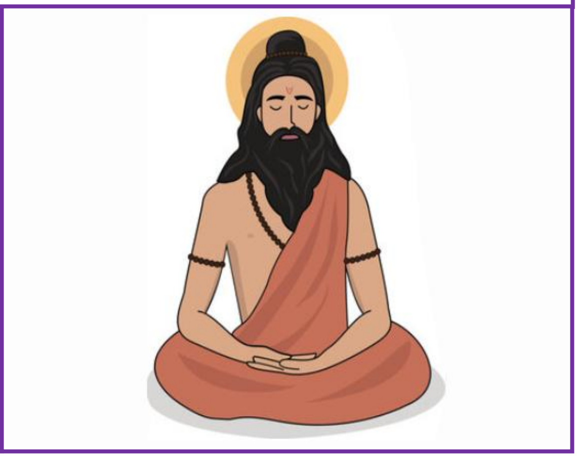

ઋતુ	ઋષભ	ઋણ
ऋतु	वृष	ऋण

ઋ ઋ ઋ

એ

એકતારો

एकतारा

એ થી એકતારો
એકતારો મારો ગુંજશે મીઠું
દેખશે વિશ્વ રહ્યું જે અદીઠું

એડી	એરણ	એળિયો
एड़ी	निहाई	घृत कुमारी

એ એ એ

ઐ

ઐક્ય

एकता

ઐ થી ઐક્ય
ઐક્યમાં બળ છે
સૂર્યમંદિર ઐતિહાસિક સ્થળ છે

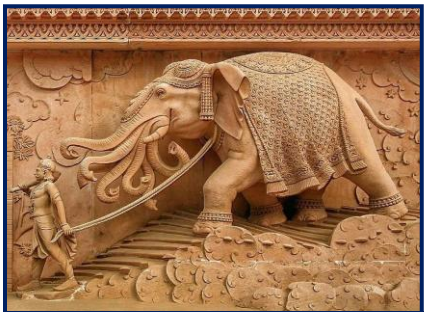

ઐરાવત

ऐरावत

ઐતિહાસિક

ऐतिहासिक

ઐશ્વર્યશાળી

ऐश्वर्यशाली

ઐ ઐ ઐ

ઓ

ઓવારો

नदी का किनारा

ઓ થી ઓવારો
ઓવારે બેસીને
વહેતા જળને નિહારો

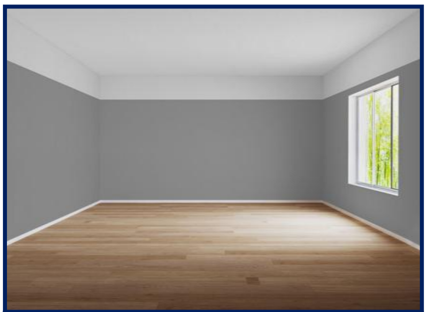

ઓખલી	ઓરડો	ઓશિકું
ओखली	कमरा	तकिया

ઓ ઓ ઓ

ઔ

ઔષધ

દવા

ઔ થી ઔષધ

ઔષધાલયથી ઔષધ લો

ઔદ્યોગિક	ઔંસ	ઔષધાલય
औद्योगिक	औंस	औषधालय

ઔ ઔ ઔ

અં

અંકુર

अंकुर

અં થી અંકુર
બીજમાંથી અંકુર ફુટે
અને છોડ બને

અંબોડો

जूड़ा

અંજીર

अंजीर

અંગૂઠો

अँगूठा

અં અં અં

અઃ

નમઃ

नमः

નમઃ માં અઃ
નમે એ સહુને ગમે
પ્રાતઃ સમયે અંતઃકરણમાં શાંતિ
મળે

અંતઃકરણ

अंतःकरण

પ્રાતઃ

सुबह

અઃ

અઃ અઃ અઃ

ક

કપાસ

कपास

ક થી કપાસ
કપાસમાંથી કાપડ બને
કાપડથી કપડા બને

કપાળ	આંકડી	ખડક
माथा	अंकुड़ा	चट्टान

ક ક ક

ખ

ખમણ

खमन

ખ થી ખમણ
ખમણ-ઢોકળા ખાખરા
નાસ્તામાં ખવાય

ખડિયો	ખાખરા	આંખ
मसिपात्र	खाखरा	आंख

ખ ખ ખ

ગ

ગરબા

गरबा

ગ થી ગરબા
નોરતામાં સહુ ગઢમાં
ગરબે રમવા જાય

ગઢ	કાગળ	આગ
किला	कागज़	आग

ગ ગ ગ

ઘ

ઘડો

घट

ઘ થી ઘડો
ઘડામાં પાણી
ઠંડુ ઠંડુ પાણી
હાથમાં વાગે ઘૂઘરી

ઘડિયાળ

घड़ी

ઘૂઘરી

घुंघरू

વાઘ

बाघ

ઘ	ઘ	ઘ	

ચ

ચકલી

गौरैया

ચ થી ચકલી
ચકલી ચણ ચણે
અને ચીં-ચીં કરે

	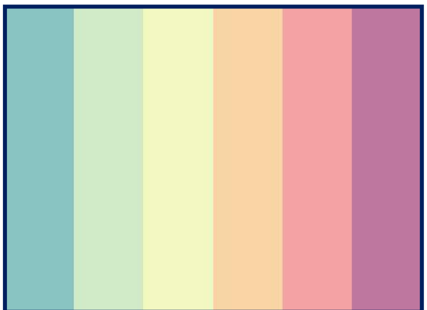	
ચમચી	પચરંગી	કાચ
चम्मच	रंग बिरंगा	काँच

ચ	ચ	ચ	

છ

છત્રી

छाता

છ થી છત્રી
વરસાદમાં છત્રીનો
ઉપયોગ થાય
છત ઘરની રક્ષા કરે

છત

छत

માછલી

मछली

વીંછી

बिच्छू

છ છ છ

જ

જલેબી

जलेबी

જ થી જલેબી
કંદોઈ બનાવે જલેબી
ટેઢી-મેઢી જલેબી

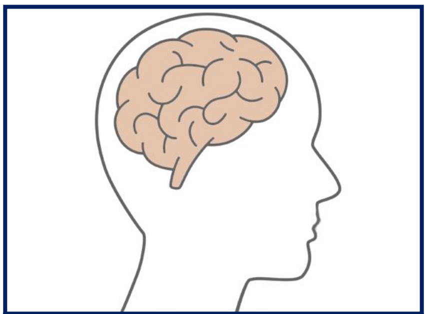

જમરૂખ	ગાજર	મગજ
नाशपाती	गाजर	मस्तिष्क

જ જ જ

ઝ

ઝભલું

झगला

ઝ થી ઝભલું
બાળકીને પહેરાવો ઝભલું
નદીથી વહે ઝરણું

ઝરણું

धारा

ઝાંઝર

नूपुर

ઝંઝાવાત

आँधी

ઝ ઝ ઝ

ટ

ટપકું

बिंदु

ટ થી ટપકું
નાનુ ટપકું
મોટુ ટપકું
લાલ લાલ ટમેટું

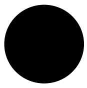

		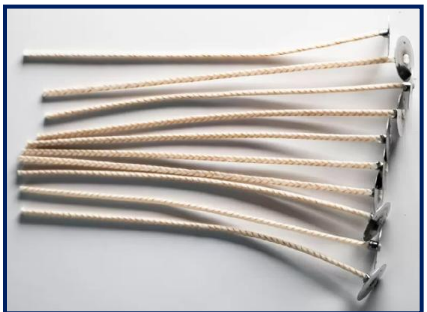
ટમેટું	ખાટલો	દિવેટ
टमाटर	पलंग	बाती

ટ ટ ટ

ઠ

ઠળિયો

बीज

ઠ થી ઠળિયો
ફળમાં હોય ઠળિયો
હસવા માટે ઠઠ્ઠાચિત્રો

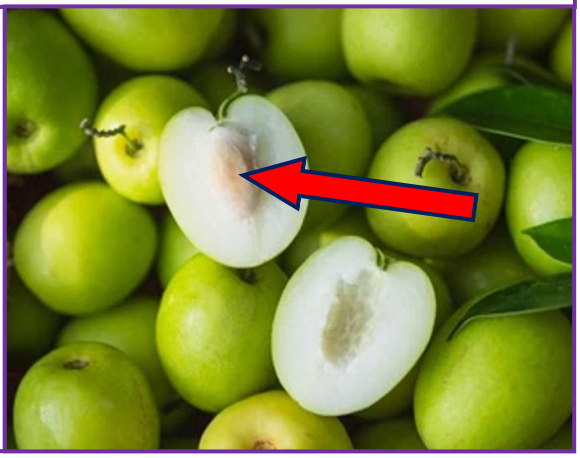

ઠઠ્ઠાચિત્ર

व्यंग्य-चित्र

ઠાઠડી

टिकठी

પીઠ

पीठ

ઠ	ઠ	ઠ	

ડ

ડમરુ

डमरु

ડ થી ડમરુ
ડમરુ વાગે
ડમ-ડમ-ડમ
ડબ્બામાં પાપડ છે

ડબ્બો

डिब्बा

દાડમ

अनार

પાપડ

पापड़

ડ ડ ડ

ઢ

ઢગલો

ढेर

ઢ થી ઢગલો
પાનખરમાં થાય પાનનો ઢગલો
ઢોલક વગાડે ઢોલિડો

ઢેલ

मोरनी

ઢોલક

ढोल

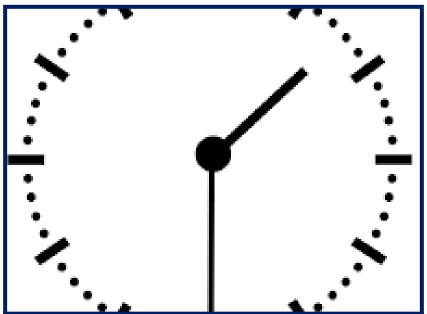

દોઢ

डेढ़

ઢ ઢ ઢ

ણ

મણકા

मनका

મણકા માં ણ
મણકાની માળા બને
છાશથી માખણ બને

ફણસ	માખણ	ગૂણ
कटहल	मक्खन	बोरा

ણ ણ ણ

ત

તરબૂચ

तरबूज

ત થી તરબૂચ
તરબૂચમાં મહત્તમ પાણી
તબલા અને સિતારની
જુગલબંધી

તબલા

तबला

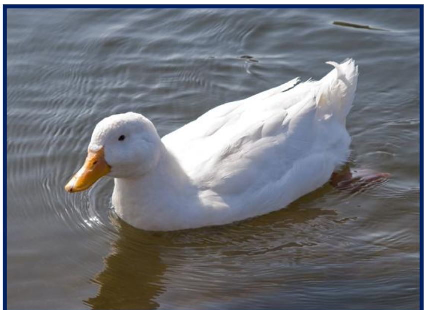

બતક

बत्तख

ભાત

चावल

ત	ત	ત	

થ

થડ

तना

થ થી થડ
ઝાડનું થડ મજબુત
પુસ્તકોની થપ્પી ઊંચી

થપ્પી

ढेर

હથોડી

हथौड़ा

રથ

रथ

થ થ થ

દ

દડો

गेंद

દ થી દડો
દડાની રમત
બાળકોની ગમત

દહીં વડા

दही वड़ा

ચાદર

चादर

બુંદ

बूँद

દ દ દ

ધ

ધજા

ध्वज

ધ થી ધજા
ધજા હવામાં ફરકે
મધમાખી મધ બનાવે

ધનુષ

धनुष

મધમાખી

मधुमक्खी

મધ

मधु

ધ ધ ધ

ન

નગારું

नगाड़ा

ન થી નગારું
નગરમાં નગારું વાગે
કાન દઈને બધા સાંભળે

નળ	અનનસ	કાન
नल	अनानास	कान

ન ન ન

પ

પતંગ

પતંગ

પ થી પતંગ
સંક્રાંતિમાં પતંગ ચગાવો

	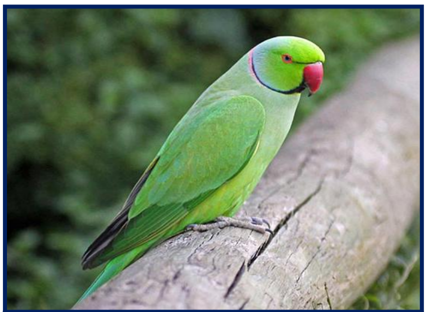	
પગ	પોપટ	ચંપો
पैर	तोता	चंपा

પ	પ	પ	

ફ

ફસલ

फसल

ફ થી ફસલ
ખેતરમાં ફસલ પાકે
ખેડૂતોને મજા પડે

ફણસી	મગફળી	બરફ
सेम	मूंगफली	बर्फ

ફ ફ ફ

બ

બદામ

बादाम

બ થી બદામ
બદામ ચાવીને ખાઓ
આરોગ્યને સુધારો

બટાકા	કાબર	ગુલાબ
आलू	मैना	गुलाब

બ	બ	બ	

ભ

ભમરડો

लट्टू

ભ થી ભમરડો
બાળકોને ભમરડો
ફેરવવાનું ગમે

ભમર

भौं

ચીભડો

खरबूज़ा

જીભ

जीभ

ભ	ભ	ભ	

મ

મહેલ

महल

મ થી મહેલ
રાજાનો મહેલ વિશાળ
ખિલાડીના હાથમાં મશાલ

મશાલ	લીમડી	મલમ
मशाल	नीम	मलहम

મ મ મ

ય

યંત્ર

यंत्र

ય થી યંત્ર
યંત્ર બનાવે જીવન અનુકૂળ
કોયલ કૂજે ગાન મધુર

પાયલ	કોયલ	ગાય
पायल	कोयल	गाय

ય ય ય

ર

રણ

रेगिस्तान

ર થી રણ
કચ્છના રણમાં ઉત્સવ
સિતાર સાંભળવાનો ઉત્સાહ

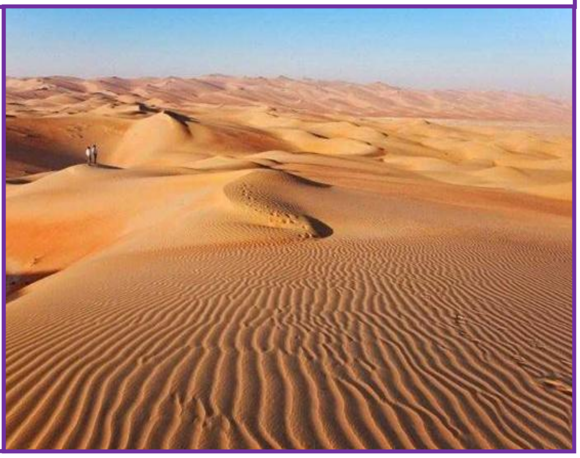

રતન	સરગવો	સિતાર
रत्न	सहजन	सितार

ર ર ર

લ

લખોટી

कंचा

લ થી લખોટી
બાળકો લખોટીથી રમે
આ રમત બધાને ગમે

લસણ

लहसुन

હલવો

हलवा

ગાલ

गाल

લ લ લ

વ

વડ

बरगद

વ થી વડ
વડમાં ઘણી વડવાઈ
ઉત્સવની ખૂબ વધાઈ

વટાણા	કવચ	ઉત્સવ
मटर	कवच	उत्सव

વ વ વ

શ

શરણાઈ

शहनाई

શ થી શરણાઈ
લગ્નમાં શરણાઈ વાગે
ઢોલક નગારા સાથે

શરબત

शरबत

રેશમ

रेशम

છાશ

छाछ

શ શ શ

ષ

ષટ્કોણ

षट्भुज

ષ થી ષટ્કોણ
ષટ્કોણમાં છ ખૂણા
ભારતમાં છે ઘણી ભાષા

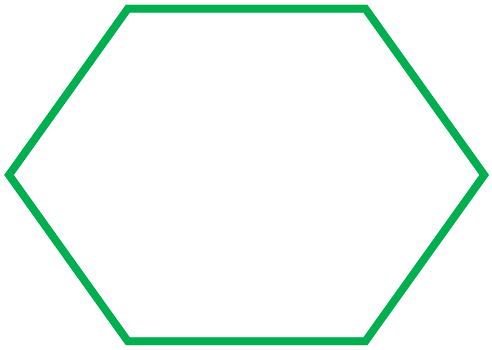

ષટપદ	પોષણ	પુરુષ
ततैया	पोषण	पुरुष

ષ ષ ષ

સ

સફરજન

सेब

સ થી સફરજન
સફરજન ખાઓ
સ્વસ્થ રહો

S

સમડી

बाज़

સસલું

खरगोश

હંસ

हंस

સ સ સ

હ

હરણ

हिरन

હ થી હરણ
હરણ જંગલમાં ફરે છે
સિંહ જંગલનો રાજા છે

હળદર

हल्दी

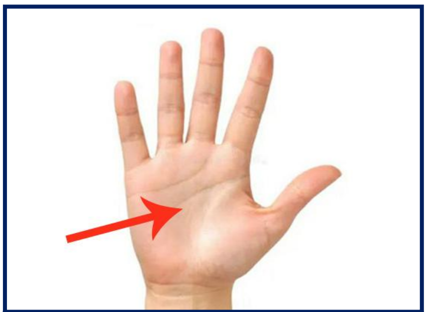

હથેળી

हथेली

સિંહ

शेर

હ હ હ

ળ

કમળ

कमल

કમળ માં ળ

કમળ ભારતનું રાષ્ટ્રીય ફૂલ છે

કળશ પૂજાનું પ્રતીક છે

કળશ	ઝાકળ	થાળ
कलश	ओस	थाली

ળ	ળ	ળ	

ક્ષ

રક્ષક

रक्षक

રક્ષકમાં ક્ષ
રક્ષક રક્ષા કરે છે
શિક્ષક પાઠ ભણાવે છે

શિક્ષક	નક્ષત્ર	દ્રાક્ષ
अध्यापक	नक्षत्र	अंगूर

ક્ષ ક્ષ ક્ષ

ત્ર

ત્રાંસુ

तिरछा

ત્ર થી ત્રાંસુ
જ્યારે ત્રાંસી ત્રણ લીટીઓ મળે
ત્યારે આકાર ત્રિકોણનો બને

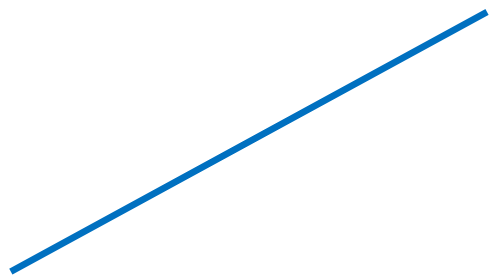

ત્રાજવા

तराजू

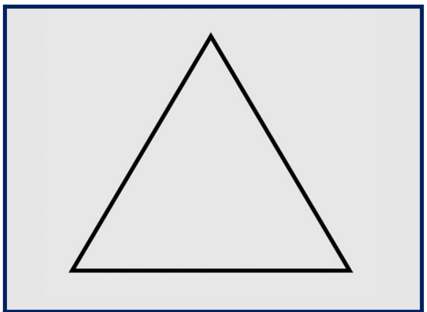

ત્રિકોણ

त्रिकोण

પત્ર

पत्र

ત્ર ત્ર ત્ર

જ્ઞ

જ્ઞાનકોશ

विश्वकोश

જ્ઞાનકોશમાં જ્ઞ
જ્ઞાનકોશમાં શબ્દોનો ભંડાર છે
જેથી જ્ઞાનમાં વધારો થાય

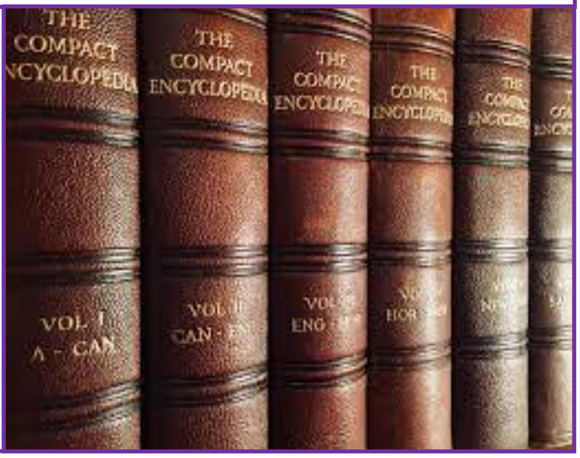

જ્ઞાન

ज्ञान

જ્ઞાનતંતુ

तंत्रिका

યજ્ઞ

यज्ञ

જ્ઞ જ્ઞ જ્ઞ

સ્વર	માત્રા ચિહ્ન	દાખલો	દાખલો
અ	◌		
આ	◌ા	 ગાય	 માળા
ઇ	િ◌	 બિલાડી	 ગિરિ
ઈ	◌ી	 ખીર	 મોતી
ઉ	◌ુ	 લીંબુ	 ઘુવડ

સ્વર	માત્રા ચિહ્ન	દાખલો	દાખલો
ઊ	◌ૂ	 કૂવો	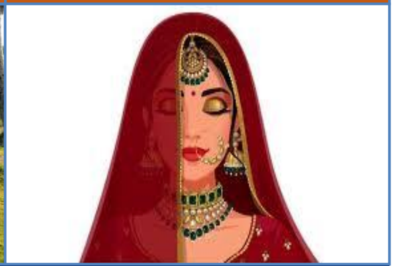 નવવધૂ
ઋ	◌ૃ	 વૃત્તપત્ર	 તૃણ
એ	◌ે	 પેટી	 કેસર
ઐ	◌ૈ	 વૈદ	 પપૈયું
ઓ	◌ો	 તોરણ	 હિરો

સ્વર	માત્રા ચિહ્ન	દાખલો	દાખલો
ઔ	◌ૌ	 ચૌટું	 પૌવા
અં	◌ં	 શંખ	 કંકુ
અઃ	◌ઃ	 નમઃ	 ક્રમશઃ

અંકો (૧-૨૦) :

૧	એક		1
૨	બે		2
૩	ત્રણ		3
૪	ચાર		4
૫	પાંચ		5
૬	છ		6
૭	સાત		7
૮	આઠ		8
૯	નવ		9
૧૦	દસ		10

૧૧	અગિયાર		11
૧૨	બાર		12
૧૩	તેર		13
૧૪	ચૌદ		14
૧૫	પંદર		15
૧૬	સોળ		16
૧૭	સત્તર		17
૧૮	અઢાર		18
૧૯	ઓગણીસ		19
૨૦	વીસ		20

ચાલો નીચેના અંકો લખીએ!

૧	૧	૧	૧	
૨	૨	૨	૨	
૩	૩	૩	૩	
૪	૪	૪	૪	
૫	૫	૫	૫	
૬	૬	૬	૬	
૭	૭	૭	૭	
૮	૮	૮	૮	
૯	૯	૯	૯	
૧૦	૧૦	૧૦	૧૦	

૧૧	૧૧	૧૧	૧૧	
૧૨	૧૨	૧૨	૧૨	
૧૩	૧૩	૧૩	૧૩	
૧૪	૧૪	૧૪	૧૪	
૧૫	૧૫	૧૫	૧૫	
૧૬	૧૬	૧૬	૧૬	
૧૭	૧૭	૧૭	૧૭	
૧૮	૧૮	૧૮	૧૮	
૧૯	૧૯	૧૯	૧૯	
૨૦	૨૦	૨૦	૨૦	

हिंदी वर्णमाला

स्वर वर्ण

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	

व्यंजन वर्ण

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	स	ह		
क्ष	त्र	ज्ञ		
श्र	ड़	ढ़		

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

1. Install ePathshala Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

1. Select preferred language
2. Choose your role: Student or Teacher
3. Grant access and allow app permissions
4. Tap to scan the QR code
5. Focus camera on the QR code in textbook
6. Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
1	ANAL	12	HALABI (HALBI)	23	KONDA	34	MANIPURI	45	SANTALI (WEST BENGAL)
2	ANGAMI	13	HMAR	24	KORKU	35	MAO	46	SAVARA (SORA)
3	AO	14	JATAPU (KUVI)	25	KOYA	36	MISHMI	47	SHERPA
4	ASSAMESE	15	JUANG	26	KUI	37	MISING	48	SÜMI (SEMA)
5	BHUTIA	16	KABUI (RONGMEI)	27	KUKI	38	MIZO	49	TAMANG
6	BODO	17	KARBI	28	KURUKH/ORAON	39	MOGH	50	TANGKHUL
7	DEORI	18	KHANDESHI	29	KUWI	40	MUNDARI	51	TANGSA
8	DESIA	19	KHARIA	30	KUZHALE (KHEZHA)	41	NEPALI	52	TIWA (LALUNG)
9	DIMASA	20	KINNAURI	31	LIANGMAI	42	NYISHI (NISSI)	53	TULU
10	GADABA (GUTOB)	21	KISAN (KUNHU)	32	LIMBU	43	RAI	54	WANCHO
11	GARO	22	KODAVA (COORGI/KODAGU)	33	LOTHA	44	SANTALI (ODISHA)		

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
55	ADI	60	HO	65	KOM	70	MARAM	75	RENGMA
56	BHUMIJ	61	KHIAMNIUNGAN	66	KONYAK	71	NOCTE	76	SHINA
57	CHANG	62	KOCH	67	LADAKHI	72	PASHTO	77	TAMIL
58	GONDI	63	KODA (KORA)	68	LEPCHA	73	POCHURY	78	TIBETAN
59	HALAM	64	KOLAMI	69	MARA (LAKHER)	74	RABHA	79	YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE)

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-III (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
80	BENGALI	85	GUJARATI	90	KORWA	95	MARATHI	100	ODIA
81	BHILI	86	KANDHA (KONDH)	91	LAHAULI	96	MARING	101	PARJI (DURUA)
82	BISHNUPRIYA MANIPURI	87	KANNADA	92	MAITHILI	97	MONPA	102	PHOM
83	CAR NICOBARESE (PŪ)	88	KHASI	93	MALAYALAM	98	MUNDA	103	PUNJABI
84	DOGRI	89	KONKANI	94	MALTO	99	NANCOWRY (MÖÜT)	104	TELUGU

PRIMER DEVELOPMENT IN PROGRESS (18)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
105	BALTI	109	HINDI	113	PAITE	117	SINDHI	121	ZEME (ZEMI)
106	CHOKRI	110	KASHMIRI	114	SANGTAM	118	THADOU-KUKI	122	ZOU
107	GANGTE	111	KOKBOROK (TRIPURI)	115	SANSKRIT	119	URDU		
108	GONDI-TELUGU	112	LAI (PAWI)	116	SANTALI (JHARKHAND)	120	VAIPHEI		

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
0821 2515820 (Director) / ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
011 2696 2580 / dceta.ncert@nic.in